जनचेतना के लिए प्रतिबद्ध- त्रैमासिकी

ISSN 2395-2776

वर्ष : 11 | अंक : 3

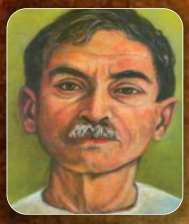

प्रेमचंद पथ

अप्रैल-जून 2026

20.00

हिंदी पत्रकारिता विशेषांक

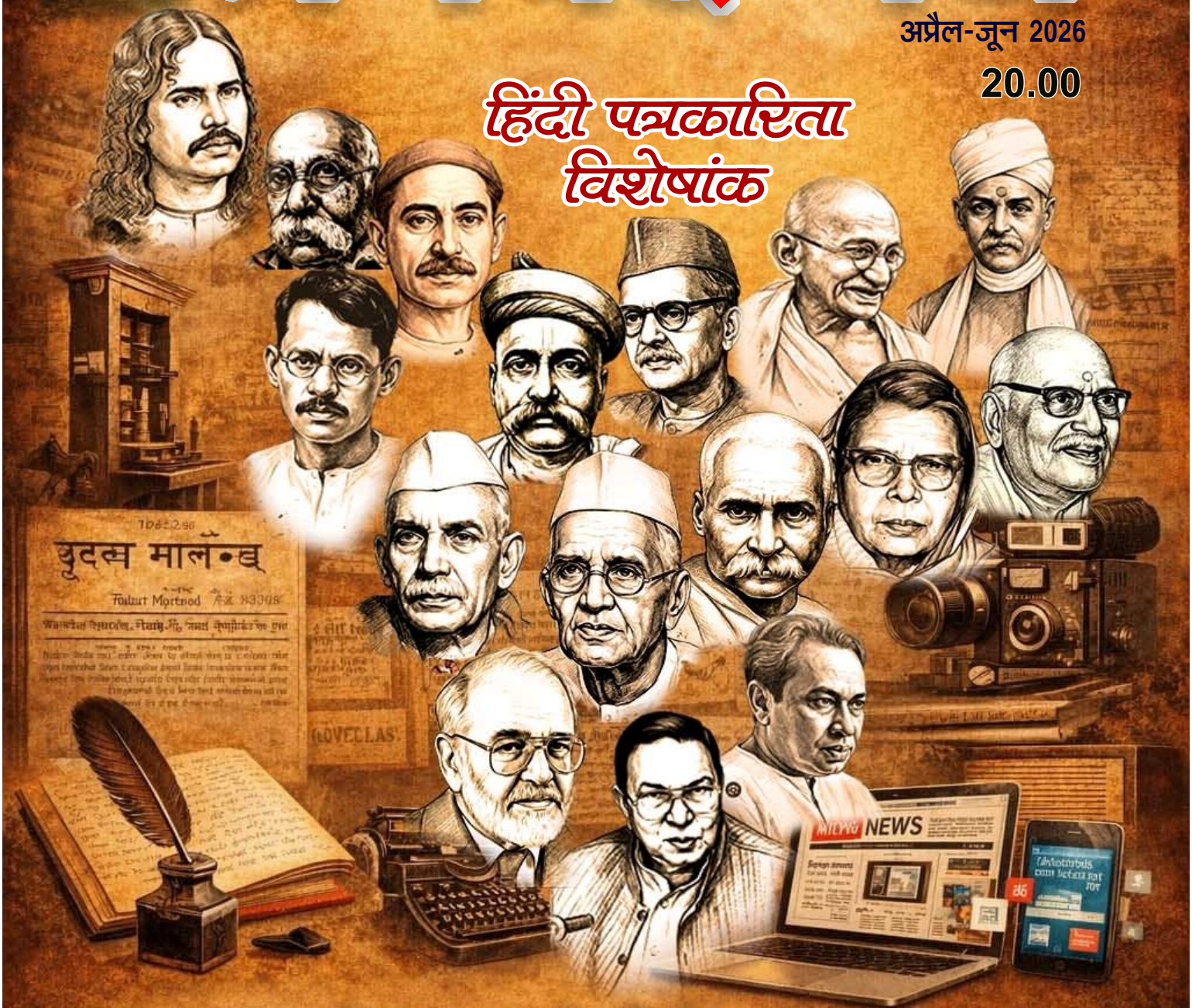

200 विरासत से डिजिटल युग तक वर्षों की हिंदी पत्रकारिता यात्रा

प्रेमचंद मार्गदर्शन केन्द्र (ट्रस्ट)

लमही, वाराणसी

जनचेतना के लिए प्रतिबद्ध

ISSN 2395-2776
R.N.I. NO. UPHIN/66795/15

प्रेमचंद पथ

वर्ष : 11 | अंक : 3 | अप्रैल-जून 2026

संरक्षक :

नंदिनी देवी राय
(भतीजी कथा सम्राट प्रेमचंद)

प्रधान संपादक
डॉ0 रामसुधार सिंह

परामर्श संपादक
प्रो. श्रद्धानंद

सम्पादक
राजीव गोंड

उप संपादक
राजीव श्रीवास्तव

विशेष सहयोगी :
संतोष कुमार प्रीत (वाराणसी), **विवेक प्रियदर्शी** (राँची), **राम प्रवेश मौर्य** (चन्दौली), **डॉ. आरसू** (केरल), **लाल प्रकाश राही** (जौनपुर), **केदारनाथ 'सविता'** (मीरजापुर), **तीरथराज सिंह** (मऊ), **सिद्धेश्वर सिंह** (पटना),

मुखपृष्ठ आवरण-
प्रो0 सुनील विश्वकर्मा
(अध्यक्ष-उ0प्र0ललित कला अकादमी एवं विभागाध्यक्ष ललितकला विभाग म0गां0का0वि0 वाराणसी)

पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं तथा लेखकों के विचार व मत अपने हैं जिससे सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र वाराणसी होगा। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनः प्रकाशन के लिए अनुमति अनिवार्य है।

सम्पादकीय कार्यालय :
ग्राम व पोस्ट - लमही, जिला-वाराणसी-221007 (उ०प्र०)
मो० : 09044798756, 09721652681
ई-मेल : premchandpath@gmail.com
वेबसाइट : www.premchandpath.com

इस अंक में.....

संपादकीय 5

स्वतन्त्रतापूर्व की हिंदी पत्रकारिता एवं माधवराव सप्रे
प्रो. राघवेंद्र मिश्र 6

हिंदी पत्रकारिता : दो सदी की ऐतिहासिक विरासत, और सफर जारी
डॉ. संदीप भट्ट 10

हिंदी पत्रकारिता के 200 साल के सफ़र में 'पोस्ट-ट्रुथ' के दौर की चर्चा
प्रो. राम प्रवेश राय 15

हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियों का भाषाई सफर : एक विमर्श
डॉ. प्रभा शंकर मिश्र 18

स्वतंत्रता संघर्ष में हिंदी पत्रकारिता के राष्ट्रचेतना-स्वर
डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र 21

हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष और महिलाएं
डॉ. अवधेश कुमार यादव 23

साहित्यिक पत्रकारिता और 'हंस'
डॉ. रामसुधार सिंह 26

हिंदी पत्रकारिता के शिल्पकार बाबूराव विष्णु पराड़कर
डॉ. अत्रि भारद्वाज 29

काशी की पत्रकारिता
डॉ. मञ्जरी पाण्डेय 31

फेक न्यूज
डॉ. संजय कुमार श्रीवास्तव 38

आधुनिक तकनीक और बदलती जीवनशैली: प्रिंट समाचार पत्रों से दूर भागते लोग
राजीव श्रीवास्तव 39

पूर्वोत्तर की हिंदी पत्रकारिता के मायने
डॉ. राजीव रंजन प्रसाद 41

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक उषा गोंड द्वारा सन प्रिंटिंग वर्क्स, 23, विवेकानंद नगर, तेलियाबाग, वाराणसी से मुद्रित एवं ग्राम-लमही, पोस्ट-लमही (सारनाथ), जिला-वाराणसी-221007 से प्रकाशित व सम्पादक राजीव गोंड

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी पत्रकारिता : अवसरों की उज्ज्वल किरणें
डॉ. प्रदीप कुमार 44
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के युग में हिन्दी पत्रकारिता की नैतिक और क़ानूनी चुनौतियाँ
डॉ. सुमित कुमार पाण्डेय 47
मीडिया आचार संहिता व जवाबदेही
डॉ. व्योमेश चित्रवंश 55
हर हाथ में कैमरा, हर जेब में रिपोर्टर
वैभव पाण्डेय 56
भक्त और टीवी के समाचार चैनल
देवेन्द्र पाण्डेय ''बेचैन आत्मा'' 57
रंगमंच की पत्रकारिता पुनर्नवा की आवश्यकता
डॉ. गौतम चटर्जी 58
कलम से मंच तक दो शताब्दियों की हिंदी पत्रकारिता और नाट्य परंपरा में जनस्वर की अभिव्यक्ति
डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव 60
समाज निर्माण में प्रिंट मीडिया की सशक्त और निर्णायक भूमिका
अरविन्द विश्वकर्मा 63
हिंदी संदेश डॉ.राजेन्द्र राही 64

सदस्यता शुल्क (रजिस्टर्ड डाक से मँगाने हेतु 25.00 रुपये प्रति अंक अतिरिक्त देय)

वार्षिक : 100 रुपये | **पंचवर्षीय : 500 रुपये** | **आजीवन : 5000 रुपये**

सदस्यता शुल्क 'प्रेमचंद पथ' के नामे वाराणसी में देय रेखांकित चेक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर ही भेंजे। बाहर के चेक लिए 25/- रु. अतिरिक्त जोड़ें अथवॉ प्रेमचंद पथ के खाता सं. 34132775691 **RTGS/NEFT, IFSC Code 0SBIN0011862** भारतीय स्टेट बैंक, चोलापुर, वाराणसी में जमा करें। आनलाईन सदस्यता शुल्क क्यूआर स्कैन से भेजे।

नोट :- सदस्तयता शुल्क भेजने के उपरांत 9721652681 पर वाट्सप व फोन करना अनिवार्य।

Premchand Margdrshan Kendra Trust
+91 90447 98756
Scan & pay
UPI ID: 9044798756@okbizaxis

सम्पादकीय....

हिंदी पत्रकारिता की वैचारिक यात्रा पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा सन् 1826 में प्रकाशित अख़बार 'उदंत मार्तंड' के एक छोटे से बीज से शुरू हुई। यह सफर आज डिजिटल ब्रह्मांड में एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से भाषाई स्वाभिमान को स्वर मिला। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगजीन' के जरिए पत्रकारिता को समाज सुधार और स्वदेशी का माध्यम बनाया। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को व्याकरणिक अनुशासन और वैचारिक गरिमा प्रदान की। बाल गंगाधर तिलक (केसरी) और मदन मोहन मालवीय (अभ्युदय) ने इसे सीधे तौर पर राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़ा। बाबूराव विष्णु पराड़कर और माधव राव सप्रे ने पत्रकारिता को 'मिशन' का स्वरूप दिया। पराड़कर जी ने 'आज' के माध्यम से मानक हिंदी शब्दावली दी, तो सप्रे जी ने भाषाई एकता और स्वावलंबन का मार्ग प्रशस्त किया।

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने 'हंस' और 'जागरण', 'माधुरी', 'चाँद' के माध्यम से पत्रकारिता को शोषितों और किसानों की आवाज बनाया। उनका विचार था कि पत्रकारिता समाज के आगे चलने वाली मशाल है। इसी मशाल को गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' के जरिए क्रांति की ज्वाला में बदल दिया। महात्मा गांधी ने 'नवजीवन' और 'हरिजन' के माध्यम से पत्रकारिता में सत्य, अहिंसा और सादगी के सिद्धांत प्रतिपादित किये। हनुमान प्रसाद पोद्दार ने 'कल्याण' के माध्यम से धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना को घर-घर पहुँचाकर पत्रकारिता के एक नए आयाम को स्थापित किया।

आजादी के बाद आधुनिक काल में हिंदी पत्रकारिता ने नए प्रयोग किये। अज्ञेय, रघुवीर सहाय, प्रभास जोशी, आदि ने पत्रकारिता में लोकतांत्रिक मूल्यों को प्राथमिकता दी। मृणाल पांडे और महादेवी वर्मा जैसी विदुषियों ने पत्रकारिता में स्त्री विमर्श और संवेदनशीलता के नए स्वर जोड़े, जिससे पत्रकारिता का फलक व्यापक हुआ।

आज जब तकनीक और डेटा का बोलबाला है, इन महापुरुषों का वैचारिक आधार ही युवाओं के लिए 'कम्पास' का कार्य कर सकता है। विरासत हमें सिखाती है कि माध्यम चाहे प्रिंट हो या डिजिटल, तथ्य की पवित्रता और लोकहित का संकल्प ही पत्रकारिता की आत्मा है। हिंदी पत्रकारिता अपनी विरासत के गौरव और वर्तमान के तकनीक के दोराहे पर खड़ी है। भारतीय युवाओं का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि वे तकनीक को अपना गुलाम बनाते हैं या स्वयं उसके गुलाम हो जाते है। यदि युवा पत्रकारिता को सत्य की खोज का माध्यम बनाए रखते हैं, तो डिजिटल युग हिंदी पत्रकारिता के लिए स्वर्णिम युग साबित होगा।

(राजीव गोंड)
ई-मेल : rajivlamahi@gmail.com